

पद २५१

(राग: देस – ताल: दीपचंदी)

भक्तराज पहेलाद पुकारे । जय नरसिंग हरे । तुमरे नाम लिये जब
प्रभुजी । संकट बिपत दुरित हरे ॥१॥ हिरनाकुस पेहेलादसे पूछे
हो बेटा क्या क्या तुम पढे । हंसके पहेलाद कहे पितासे आगम

सब मारग मारग मटि ॥१॥ क्रोधकु आये पिता कहे तब बालकको
मारहि डारो । कहे पहेलाद नहिं डर माको नरसिंह है राखनहारो ॥२॥
लेकर शस्त्र दुत तब दौरे बालकको जब मारनलागे । चक्र सुदर्शन
आसपिस शस्त्रकी घाव एकहि न लागे ॥३॥ फेंक दिये पर्वतके
ऊपरसे बालकको खुब जेर करे । बलाकका यह संकट जानके
प्रभु अधर धाय पकरे ॥४॥ तेल तपे कढईके भीतर बालकको
जब डार दिये । नरसिंग नरसिंग नाम पुकारत शीतल अगन तबहि
भये ॥५॥ पय भीतर बिखको डारके माता कहे तूं पान करे । ले
नरसिंग नाम पय पियो लागे बिख अमृतसमान रे ॥६॥ हिरनाकुस
पहेलाद से पूछे कहां आधार नरसिंग है तेरे । कहे पेहेलाद सुनिये
पिताजी जहां तहां सब पूर्ण भरे ॥७॥ हिरनाकुसने क्रोधसे जब
खंबनपर लाथ दिये । कड कड कड कड कंब फोरके तब नरसिंग
अवतार भयें ॥८॥ प्रभुजीने नखसे पेट चीरके हिरनाकुसको नाश
करे । दिनदयाल नरसिंग ऐसे निषदिन माणिक गावत रे ॥९॥